

जब भी इस दुनिया में कोई बच्चा जन्म लेता है या जन्म लेने वाला होता है तो उसकी पूर्व तैयारियां आप सबसे छुपी नहीं हैं। कितना ध्यान रखा जाता है उसकी एक-एक चीज का, एक-एक माहौल का। आस-पास के जो लोग हैं वो कैसे हैं, बच्चे के ऊपर किसी ऐसी चीज का प्रभाव न पड़े। क्योंकि जब माँ के गर्भ में बच्चा होता है तो उस वक्त चारों तरफ का वातावरण उसके लिए ऐसा बनाया जाता है जिससे वो एक अच्छे वातावरण में जन्म ले और उसी हिसाब से उसके संस्कार हों। आज ये कलियुग में भी हो रहा है और होता आ रहा है। तो इतने समय से सब लोग अपने कुलदीपकों का इंतजार करते हैं अपने कुल को रोशन करने के लिए, लेकिन जो उसकी तैयारी है वो आज शायद उस हिसाब से नहीं होती बस ऐसे ही हमारे घर में कोई बच्चा आ गया।

आप सोचिए कि द्वापर काल में भी राजाओं-महाराजाओं के यहाँ भी मुहूर्त के हिसाब से जन्म होता था, और कहाँ वो सतयुगी सृष्टि, वो प्रथम राजकुमार जिसको हम श्रीकृष्ण कहते हैं। उनके जन्म की तैयारी कैसी होगी! जो सम्पूर्ण निर्विकारी है, सम्पूर्ण पवित्र है जिसके जीवन में सिर्फ और सिर्फ पवित्रता सुख और शांति का माहौल रहा है, उसके

आस-पास का वातावरण कैसा होगा? एक कल्पना से परे की स्थिति है, और उसको सोचना भी हमें चाहिए। तो जो ऐसा कुलदीपक, ऐसा श्रेष्ठ कुलदीपक जो आज भी पूजा जाता हो उसने कितना सुन्दर पुरुषार्थ किया होगा! जिसको पूरी दुनिया आज भी नतमस्तक होकर शिरोधार्य करती है, मन्दिरों में जाती है तो भी वो उनको देखती रह जाती है।



उनकी पूजा-पाठ के

दुनिया में लोग इसको इस तरह से बोलते हैं कि जिसका इस घर में जन्म होता है निश्चित रूप से उसने बहुत अच्छे कर्म किए होंगे, जो इतने अच्छे

है, लेकिन जैसे ही कोई व्यवहारिक चीजों में धारणा की बात आती है तो कहते हैं कि हमसे कैसे हो सकता है क्योंकि ये तो हम बात ही भगवान की कर

# सर्वश्रेष्ठ कुल के कुलदीपक श्रीकृष्ण

लिए कितनी छोटी मूर्ति, बड़ी मूर्ति बनाई जाती है। क्या पुरुषार्थ रहा होगा उस श्रेष्ठ आत्मा का! कहने का सीधा-सा

घर में जन्म हुआ। और सिर्फ जन्म ही नहीं उनकी काया, उनका स्वस्थ शरीर, कंचन काया जो देह की बात की जाती है सतयुग में, शरीर भी इतना स्वस्थ है, सुन्दर है, सुडोल है, आकर्षक है साथ-साथ मन तो है ही। मन और तन दोनों सुन्दर कैसे बनें? क्योंकि अगर हम इसको वैज्ञानिक तरीके से भी लें तो कहा जाता है कभी जो-जो एक्ट हमने की है, जो-जो क्रियाएं हमने की हैं, जो-जो कर्म हमने किए हैं उन सारे कर्मों का लेखा-जोखा हमारे यहाँ पर रिकॉर्ड होता है। और वो कर्मों का लेखा-जोखा हम सबको आगे वाले जन्म में, हमारे जन्म को वैसा बनाता है। तो ये जो जन्माष्टमी है ये हमारे लिए एक उपदेश है, एक उदाहरण है कि कृष्ण का जन्म तो सतयुग में होता है और होगा ही। उसमें दोराहा नहीं है। लेकिन उस कुल में आने के लिए हम सबको कैसा होना चाहिए? या कैसा होना होगा ये सोचने का विषय है, या सिर्फ कृष्ण को देखकर खुश हो जाना, थोड़ा-सा उनके लिए गा लेना, थोड़ा उनके लिए कीर्तन कर लेना ये तो सभी कर रहे हैं। लेकिन वो जो राजकुमार की स्थिति है, जिस राजकुमार को देखने के लिए पूरी दुनिया टूटती है उन गुणों और विशेषताओं के आधार से कुल को श्रेष्ठ बताया जाता है।

व्यक्ति महान कब है, जब वो व्यवहारिक है। सैद्धान्तिक रूप से जो शास्त्रगत बातें लिखी गई हैं उसको पढ़ के कोई भी ऊंची-ऊंची बात कर सकता

रहे हैं, देवी-देवताओं की कर रहे हैं हम वैसे नहीं हो सकते। लेकिन आज आपको बताते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि ऐसी सतयुगी सृष्टि के निर्माण में बहुत सारे ब्रह्मावत्स, ब्रह्माकुमार-ब्रह्माकुमारी आज उसी श्रीकृष्ण के खानदान में जाने के लिए, उस कुल में जाने के लिए, श्रेष्ठता के साथ जीवन जीने के लिए पुरुषार्थ में लगे हुए हैं कि हम भी उस राज्य में आयेँगे। उसके लिए सिर्फ अपने व्यवहार पर कर्म कर रहे हैं। इसीलिए श्रीकृष्ण की झांकी लगाई जाती है ताकि हम अपने मन में झांका करके कृष्ण के अन्दर जो गुण और विशेषतायेँ हैं उनकी तुलना करके अपने आप को देख सकें, चेक कर सकें।

तो क्यों न ऐसी सृष्टि का निर्माण करने में हम सभी एक श्रृंखलाबद्ध तरीके से कर्म करें। तो वो चमकता हुआ तेजोमय चेहरा, वो दुनिया, वो दुनिया के श्रेष्ठ साधन, वो आज भी दुनिया जिसको पूजे, वो स्थिति, ऐसा कर्म करने वाला श्रीकृष्ण का गायन उनके लिए ही नहीं आपके लिए भी निश्चित रूप से होगा तो वो जन्माष्टमी के साथ एक न्याय हो जायेगा। आप ये न सोचें कि हर बार अर्थपूर्ण भाव से, भावपूर्ण स्थिति के आधार से एक-एक त्योहारों का वर्णन किया जाता है, नहीं। ये त्योहारों का वर्णन हमारी मानसिक स्थिति ही है। उसका चारित्रिक वर्णन और स्थूल वर्णन तो पूरी दुनिया करती है। तो हम, जो स्थिति है उसी का वर्णन आपके सामने रखते हैं ताकि उन चरित्रों का सही और सटीक चित्रण आपके सामने हो। तो चलें इस पथ पर...!



**भादरा-राज।** अंतर्राष्ट्रीय नर्सिंग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में मेहरा हॉस्पिटल के डॉक्टर इकबाल जीत कौर एवं सभी नर्सों के साथ समूह चित्र में ब्र.कु. चंद्रकांता बहन, ब्र.कु. भगवती बहन तथा अनाथ आश्रम व बेटों बच्चों बेटों पढ़ाओं के संयोजक धर्मपाल जी।



**पटना सिटी-गुलजारबाग(बिहार)।** अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित कार्यक्रम के उद्घाटन पश्चात् ईश्वरीय स्मृति में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. रानी बहन, हृदय रोग विशेषज्ञ डॉ. नरेश चंद्र माथुर तथा अन्य।



**मोकामा-बिहार।** औंटा गांव में विष्णु महायज्ञ की मुख्य कथावाचक श्रीश्री 1008 प्राची देवी जी से ज्ञान चर्चा के पश्चात् उन्हें ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. निशा बहन।



**कादमा-हरियाणा।** ब्रह्माकुमारीज द्वारा अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर आयोजित पाँच दिवसीय 'मानवता के लिए योग' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय संचालिका ब्र.कु. वसुधा बहन, भारत स्वाभिमान ट्रस्ट के युवा जिला प्रभारी प्रवीन योगी बेरला, शिवकुमार योगी, ब्र.कु. ज्योति बहन, ईश्वर सिंह पूर्व मैनेजर, अशोक शर्मा तथा अन्य भाई-बहनें।



**कानपुर-उ.प्र.।** 'आजादी के अमृत महोत्सव से स्वर्णिम भारत की ओर' अभियान के अंतर्गत ब्रह्माकुमारीज एवं कल्चरल मिनिस्ट्री ऑफ भारत के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' कार्यक्रम में ब्रह्माकुमारीज की क्षेत्रीय संचालिका राजयोगिनी ब्र.कु. दुलारी दीदी, ब्र.कु. शशि बहन, ब्र.कु. सुनीता बहन तथा अन्य भाई-बहनें उपस्थित रहे।



**कोटा-एमबीएस नगर(राज.)।** ब्रह्माकुमारीज द्वारा डडवाड़ा में आयोजित 'बाल संस्कार शिविर समर कैम्प' के दौरान तम्बाकू निषेध दिवस मनाया गया। इस दौरान साउथ लायंस क्लब के अध्यक्ष डॉ. जगदीश प्रसाद शर्मा, राम मंदिर के अध्यक्ष ऋषि कुमार शर्मा, यूरोबिक्स टीचर दिव्या शर्मा, कोटा संभाग प्रभारी ब्र.कु. उर्मिला बहन, स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. प्रीति बहन तथा बच्चे उपस्थित रहे।